हमारे यहाँ सब प्रकार की पुस्तकें जैसे नाटक, गाने की किस्से-कहानी, उपन्यास धार्मिक आदि हर एक मेल की हमेशा मौजूद रहती है। व्यापारियों को खास किफायत से दिया जाता है। एकबार खरीदकर अनुभव करें।

पता:—

मोतीलाल बुक एन्ड सन्स

बुक सेलर्स

खंडवा, सी. पी.

चित्र.

हमारे यहां हर प्रकार के चित्र हमेशा तैयार मिलते हैं। रवीवैभव प्रेस के, जर्मनी के छपे, नेताओं, देवताओं के आदि छोटे बड़े हरएक साइज के व फ्रेम भी किया जाता है व उसका सामान भी मिलता है कांच, फ्रेम, माउन्ट कार्डबोर्ड इत्यादि एकबार परीक्षा कर अनुभव करें।

पता:-एन० एम० उपाध्याय
खण्डवा, सी० पी०

धारो से एक्यता की,
जल्दी इसे बुझादो ॥
त्यागो बसन विदेशी,
पहिनो पवित्र खद्दर ।
स्वाधीनता बुलाने,
चरखा जरा चलादो ॥
प्याले शराब के पी,
उन्मत्त हो रहे जो ।
निज देश प्रेम प्याला,
पीयुष का पिलादो ॥
सुन्दर कवच अहिंसा,
रक्षा करे तुम्हारी ।
मैदाने जंग में आ,
करतूत कुछ दिखादो ॥
जंजीर दासता से, जकड़े रहोगे कब तक ।
बन्धन को तोड़ने की, सच्ची लगन लगादो ॥

सिर से पैरों तक सब लोगों के,
दिखे नजारा खादी का ।
स्वावलम्बन का साधन है,
यह सरल गुजारा खादी का ॥
आजादी अपनी दूर नहीं,
जब लिया सहारा खादी का ।
बरबादी होय विदेशों की,
अब ऊगा सितारा खादी का ॥

सच्ची लगन लगादो

माता के नौ निहालों, जौहर जरा दिखादो ।
भारत गुलामको अब, आजाद तो बनादो ॥
गफलत की नींद में जो,
हो बेखबर पड़े हो ।
डंके की चोट से तुम,
अब तो उन्हें जगादो ॥
डायन यह फूट ज्वाला,
घर घर धधक रही है ।

खादी नहीं आजादी

निपट दिगम्बर होलेंगे,
या लेंगे अम्बर खादी का।
सारे आडम्बर छोड़ेंगे,
ओढ़े पाटम्बर खादी का॥
पतित प्राण प्रभु पहने हैं,
पावन पीताम्बर खादी का।
सत्य शक्ति शुचि शांति युक्त,
सुन्दर शुक्लाम्बर खादी का॥
गादी पर खोली खादी की,
उसपर शुद्ध चादर खादी का।
शादी में खादी चलने दो,
बढ़ने दो आदर खादी का॥
मरने से डरे नहीं कोई;
सो पान सरासर खादी का।
स्वर्ग सदन पहुँचा देंगे हम,
कफन उढाकर खादी का॥

NATIONAL A... IES LIBRARY
No. 186
Date 3-12-71
(२९)
INDIA
GOVT

चरखा

हमारे पूर्वजों के हाथ का हथियार है चर्खा
जिसे गांधी ने अपनाया वही दिलदार है चर्खा
उठो अय भाइयों बस जानलो सरदार है चर्खा
झुकादो इसके आगे सर यही सरकार है चर्खा

अजब रफ्तार है इसकी चलेगा वेग से जिसदम
कटेगी बेड़ियां भारत की वे वह धार है चर्खा
न समझो काठ का इसको ना केवल सूत की कल है
जिरह बख्तर यही है तन का अरु तलवार है चर्खा

पड़ी परतन्त्रता की बेड़ियां जो आज पैरों में
उन्हीं को काटने का तीक्ष्ण तय औजार है चर्खा
यही है ताज भारत का यही सुख साज है चरखा
हमारी हिंद माता के गले का हार है चर्खा

चले गर वे तो भारत में अगर तुम देखना अंबे
अगर इंग्लैंड में हो बड़ा दमदार है चर्खा

कंचन है हम काटो-छांटो,
छेदो या करदो कुछ भी।
तोपों के मुहरों पर मुझ को,
ब्यान एक ही देना है ॥
शांति शस्त्र के बल पर हमको,
अपना भारत लेना है।
रामा दल के वानर बनकर,
रावण का कुल संहारा है ॥
छैल खवैया के साथी बन,
हमने कंस बिदारा है।
अब गांधी के गोप बने है,
तस्कर तोप हटाने को ॥
टाई टोप नशा देवेंगे,
मां का ताप मिटाने को।

करता हूँ सुरे आम मैं इजहार स्वदेशी,
रक्खूंगा अपने देश में सरकार स्वदेशी ॥

गोरों के सरदार बराबर,
मक्कारी झलकाते हैं ।
माल हमारा खाकर के भी,
करते हैं पामाल हमें ॥
मालामाल किया लंदन को,
और किया कंगाल हमें ।
मेरा तो इकरार यही है,
बदला खूब चुका लूंगा ॥
न्याय निहाई की फांसी पर,
अपना सर दे डालूंगा ।
चले न्याय की छुरी चाहे,
तोप भरी या तोप भरी ॥
मैं निर्भय बढ़ता हूं पथ पर,
दृढ़ पेशा निश्चल ठहरी ।
हमें आग में डाल जलाओ,
तेज हीन होंगे न कभी ॥

नंदकुमार मार फांसी गए,
उसने भारत को चूसा था ।
मिहमानी करते करते ही,
मनमानी चलवाई है ॥
फिरती भूति सुगति भारत की,
मटिया मेट कराई है ।
भारत का अन्न धन पाकर,
जो अपनी भूख बुझाते हैं ॥
सोलह दूनी आठ हमें दे,
पूरीराम सिखलाते हैं ।
न्यायासन पर बैठ बावरे,
वीरों से ठठकाते हैं ॥
चाकर चौकीदार चुगलियां,
लम्बी नाक कटाते हैं ।
शासन स्वर्ग सदा करके,
बंगीयों के साँप बनाते है ॥

बयान

जहाँगीर के शासन में जब,
सर टामसरो आया था ।
चरणों में शीश झुका करके,
व्यापारी पट्टा पाया था ॥

फूट फसाके फैलाकर,
लूट लिया भारत सारा ।
टेम्स नदी में बहा ले गये,
गङ्गा की गौरव धारा ॥

गोरे तन में काले मन को,
क्लाइव कर छिपाये था ।
क्लीव कुचक्री कलुषित था,
जाफर को गधा बनाये था ।

वारन हेस्टींग का जीवन,
पापों की मंजूषा था ॥

त्याग विदेशी वस्त्र प्रेम से,
खादी को अपनइहौं।
स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर,
जीवन-पुष्प चढ़इहौं॥
सत्याग्रह सैनिक बन रण में,
कीर्ती-कला लहरइहौं।
बनकर निर्भय समराङ्गन में,
हा हाकार मचइहौं॥
सेना नायक 'कर्मवीर' की,
आज्ञा पर मिट जइहौं।
आज़ादी के लिये प्रेम से,
मृत्यु को गले लगइहौं॥
स्वर्ण दिवस भारत में मोहन,
फिर इकबार दिखइहौं।
होगा अपना राज्य चैन से,
जीवन सभी बितइहौं॥

वह कलम रख हाथ से,
'मुक़र्रर' न हो तू ए हाकिम।
तू नहीं आज़ाद पर,
हिंदोस्तां हो जायगा॥

प्रतिज्ञा

अब मैं बैठि न समय गंवइहौं।
मातृ भूमि की रज को लेकर,
सादर शीश चढ़इहौं।
देश भक्ति की भस्म रमाकर,
घर घर अलख जगइहौं॥
विजयी राष्ट्र तिरङ्गा झण्डा,
मान सहित फहरइहौं।
चर्खे के मृदु स्वर से अगणित,
भारत भूमि गुंजइहौं॥

कौन कहता था कि हिन्दी,
उठ जाके हो जायगे ।
हज़रते गांधी हमारा,
सायबां हो जायगा ॥
है ज़माना नाम इसका,
यकसां रहता नहीं ।
जो शहनशाह आज है,
कल नातवां हो जायगा ॥
हर कमाले-जोर कर यूं,
वो ज़वाले रा कमाल ।
मगर जल्वा कुदरत का,
जब नूरे अफ़शां हो जायगा ॥
था अगरच मगरूर होना,
चार दिन के वास्ते ।
फिर वे रंगो रौनकें,
यकदम खिजां हो जायगा ॥

आज़ादे-वतन

क्या ख़बर थी इनक़लाबे,
आसमाँ हो जायगा ।
हिन्द सारा एकदम इन से,
फ़ना हो जायगा ॥
कार्ले मैक्स फोर्ड डायर के,
सर सर ज़ुल्म से ।
ज़ालिमों बाक़ी ख़लक़,
मुश्किल कुशा हो जायगा ॥
हिन्द क़ाबू में हुआ था,
हाय कैसा सर बसर ।
दर पे आज़ादी खड़ा है,
बे गुमाँ हो जायगा ॥
अब नहीं चारा कोई,
आज़ाद करने के सिवा ।
तर्के मवालाते मुल्क,
विरदे ज़ुबाँ हो जायगा ॥

अब ऐसी अदाओं की, चलाई न जायगी
तुम जुल्मों सितम लाख, करो हम पे खुशी से
पर तेग मुकाबिल में, चलाई न जायगी
सर शौक से तुम करदो, कलम तुमको कसम है
पर अपनी ज़बां तक भी, हिलाई न जायगी
ख्वाहिश रवा नहीं है, तुम्हें गैर कि हरगिज़
हम से भी हक़ की बात, भुलाई न जायगी
की ख़ाक तुम्हारी कि, हुआ कितना तअल्लुक़
गर्दिश कुदरतों की, मिटाई न जायगी
बरदाश्त किये बैठे हैं, आये भी लब पे
पर दर्द की कहानी, सुनाई न जायगी
परवाना बने जले मरें, पर शमां भी बुझो
बाकी रही बुराई, भलाई न जायगी
देखा "हकीम" हमने, ज़माने को गौर से
मस्ताती बादे मर्ग, छुड़ाई न जायगी

वह मथुरा से द्वारिका आये थे,
यह आफ्रिका में रह आये हैं ॥
वह माखन चोर कहाते थे,
यह नमक चोर कहलाते हैं ।
उनका भी भक्त जमाना था,
इनका भी भक्त जमाना है ॥
उन मोहन का बरसाना था,
इन मोहन का बरसाना है ।
जब भी यह भारत निर्भय था,
अब भी यह भारत निर्भय है ॥
जयकार हुआ था उस मोहन का,
जयकार होगा इस मोहन का ॥

छिपायी न जायगी ।

सीने की आग हम से, छिपायी न जायगी
बेपर्दे मुहब्बत भी, दिखाई न जायगी
हमदर्द बनो तो आ के, किसी की नहीं परवाह है

वह विख्यात व्रज बिहारी थे,
तो यह गुजरात बिहारी हैं।
वह चक्र सुदर्शन धारी थे,
तो यह भी तकली धारी हैं॥
वह काली कमली वाले थे,
यह खादी मय दिखलाते हैं।
वह बंशी मधुर बजाते थे,
यह चरखा खूब चलाते हैं॥
वह प्रगटे कारागृह में थे,
यह कारागृह के वासी हैं।
वह नेता महाभारत के थे,
यह नेता सत्याग्रह के हैं॥
वह दूध गाय का पीते थे,
इनको बकरी का भाया है।
उनने गोवर्धन अधर उठाया था,
इनने भारत को इधर जगाया है॥

हा जतीन्द्र

भारत में अपनी शान का, बस एक था जतीन
घुलघुलके अपनी जानपर, जो मरगया जतीन
स्वातंत्रता के युद्ध में, पहिला ही अपना नाम
भारत के बच्चों बच्चों में, लिखा गया जतीन
हंसते हंसते हो गया, जो मौत का महमान
आजादीका वह मरना, भी सिखागया जतीन्द्र
संसार में जो सभ्य है, उनका काला कानून
लिखकर जिगरके खूनसे, दिखा गया जतीन्द्र
क्रूरों के अत्याचारों को, सह गया चुपचाप
मरकर भी अमरलोक को, वह पा गया जतीन्द्र
साम्राज्यका तो नाश होवे, विजयी हो क्रान्ती

माखन चोर नमक चोर

हिन्द वासियों सुनो जरा देकर ध्यान।
मोहन मोहनदास का करता हूं गुणगान॥

वह गादी सुमन के पायक थे,
यह श्री गांधी के शायक हैं।
वह रामादल के नायक थे,
यह स्वतंत्र सेना नायक हैं॥

वह अरिदल रौंद दबाते थे,
यह अरिदिल को दहलाते हैं।
वह भ्राता भक्त कहाते थे,
यह भारत भक्त कहाते हैं॥

वह वल्कल वसन रहे धारे,
यह धारण करते खादी हैं।
वह दण्डक वन कुछ रोज रहे,
यह कारागृह के आदि हैं॥

वह अजय प्रसिद्ध विश्व में थे,
इनकी भी निश्चित समझ विजय।
अब सब मिलकर 'अवधेश' कहो,
वरवीर जवाहरलाल की जै॥

वह रघुकुल के उजियारे थे,
यह नेहरू कुल के तारे हैं।
वह नृप दशरथ के प्यारे थे,
यह मोतीलाल दुलारे हैं॥
वह सुमुखि सुमित्रा के सुत थे,
यह सुत स्वरूप रानी के हैं।
वह वीर प्रभू के वीर पुत्र,
यह शेर स्वाभिमानी के हैं॥
वह पति उर्मिला सती के थे,
यह कमलाकान्त कहाते हैं।
वह धनुष बाण के धारी थे,
यह शांति शस्त्र अपनाते हैं॥
वह तीर्थ अयोध्या वासी थे,
यह तीर्थराज निवासी हैं।
वह धीर वीर गंभीर रहे,
यह भी समस्त गुणराशी हैं॥

माता की और देश की,
सेवा जो करते थे।
किसके सुपुर्द कर गये,
बतलादो भगतसिंह ॥
आजाद भी दीवाने थे,
आजादी के मगर।
क्यों छोड़ गये बरबादी में,
बतलादो भगतसिंह ॥
भारत अब ऐसे वीरों से,
आबाद हो 'चन्द्र'।
भारत में फिर कब आओगे,
बतलादो भगतसिंह ॥

माता भक्त और भारत भक्त

जवान जवाहरलाल का अनुपम देखि मिलान।
जो आज जग में सकल करते को गुणगान ॥

ये देश मान वाले थककर उतर गये सब ।
गोरे रहे न काले तुझको ही एक पाऊं ॥
सेवा में तेरी सारे भेदों को भूल जाऊं ।
वह पुण्य नाम तेरा प्रतिदिन सुना सुनाऊं ॥
तेरे ही काम आऊं तेरा ही नाम गाऊं ।
मन और देह तुझ पर बलिदान मैं चढ़ाऊं ॥

भगतसिंह

छोड़ हमें तुम गये कहां,
बतलादो भगतसिंह ।
काम करे अब कौन यहां,
बतलादो भगतसिंह ॥
धोखे ही धोखे में गये,
तुम छोड़ हमें प्यारे ।
अब किससे जाके पूछें हम,
बतलादो भगतसिंह ॥

चहचहा कुमरी उठी,
सुनकर 'ललित' गाना मेरा ॥
त्याग, उसका सीखना,
गैरों को सिखलाना जरा ।

वीर युवकों जान पर,
मर मर के मिट जाना मेरा ॥

मातृ वन्दना

जय मातृ भूमि तेरे, चरणों में सर नवाऊं ।
मैं भक्ति भेंट अपनी, तेरी शरण में लाऊं ॥
माथे पे तूही चन्दन, छाती पे तूही माला ।
जिह्वा पै गीत तुम हो, मैं तेरा नाम गाऊं ॥

जिससे सपूत उपजे, गांधी तीलक जैसे ।
उस तेरी धूलिको मैं, निज शीश पे चढ़ाऊं ॥
माने समुद्र जिसके धुलि का दान करके ।
करता है मान तेरा उस पैर को मनाऊँ ॥

साथ गुरु सुखदेव का,
तख्ते पे झुलवाना मेरा ॥
धन्य वह जल्लाद था,
वह भूमि भी धन्य २ थी ।
धन्य वो माता पिता का,
पुत्र कहलाना मेरा ॥
न्याय भी वह धन्य था,
जो कुछ न सुनवाई हुई ।
'क्रॉस' तक होने न पाया,
शोक करवाना मेरा ॥
देह नश्वर छुट गया,
दरिया व सतलज तीर पर ।
रह गया आखिर जहाँ मैं,
जिस्म जलवाना मेरा ॥
खून समझा यह खता,
खून ही था उनके मारे से ।

हंसते हंसते चढ़ गया,
फांसी पे दीवाना मेरा ॥
प्राण पे भी खेलकर,
अभिमान रक्खा देश का ।
जालिमाना जुल्म से,
था वह न घबराना मेरा ॥
हर नसों में चल रही थी,
देश सेवा की लहर ।
वह जनाना था नहीं,
निर्भिक मर्दाना मेरा ॥
कर्मयोगी थे वे तीनों,
बन्धु त्रय भोगी न थे ।
सत्तपस्वी वीर बाला,
हिन्द का राणा मेरा ॥
साथ ही फांसी पे लटका,
उफ नहीं लाया तानक ।

प्यारे भगत

प्यारे भगत की सूरत आँखों में बस रही है।
अन्याय की कटारी प्राणों में चल रही है॥
हर तौर जुल्म करना यह काम है तुम्हारा।
माता न सिसकने पाई ये हद हो रही है॥
सुखदेव और गुरु भी चलते हुए यहाँ से।
हर शख्सकी जुबाँ से हक र निकल रही है॥
इस सिंह के बदौलत लाखों हुए हैं भरती।
मारोगे कब तलक तुम सिक्कस ये कह रही है॥
भारत को देख 'चन्द्र' आँसू बहा रहा है।
शर्तें सुलह की करके नियत बदल रही है॥

भगत की राष्ट्र भक्ति

शेरदिल वह वीर,
आजादी का मस्ताना मेरा।

सबकी इसमें लगी समाधी ॥

प्रकट हुआ 'गीता-रहस्य' सा इससे ग्रंथ उदार

भज मन भारत कारागार

हे पूज्य गांधी

साबरमती के संत हो सरकार तुम्हीं हो ।
संसार के सत्याग्रही सरदार तुम्हीं हो ॥
देखा नहीं जिन्होंने है, इकबार भी तुम्हें ।
रहते जबां पे उनकी भी हरबार तुम्हीं हो ॥
तैंतीस कोटि तार लिये एक तार में ।
हरतार तार के करतार तार तुम्हीं हो ॥
दीनों में दीन, हीन हो दुःखियों में दुखी हो ।
धनियों में धन, कुबेर के भंडार तुम्हीं हो ॥
देवों में देव देवता, ऋषियों में ऋषि हो ।
भारत के पूज्य गांधीजी अवतार तुम्हीं हो ॥
जपता है 'अम्बे' नाम सदा हीराहर पड़ो ।
भारत में भूमि-भार हरण हार तुम्हीं हो ॥

देवता स्वरूप नेता गांधी का अमोघ अस्त्र ।
हमको स्वराज्य शीघ्र चरखा दिलायेगा ॥

कारागार

भज मन भारत कारागार
पुण्य-प्राण परमेश कृष्ण का हुआ जहां अवतार
आत्म-श्राद्ध का मंत्र-निकेतन ;
देश-भक्त का नव जीवन धन ॥
दुख-भंजन जन मन-रंजन शुभ महिमा अपरंपार
बंधकर बद्ध मुक्ति पाते हैं ।
दृढ़ता पाठ सीख जाते हैं ॥
कड़ियां कड़ी दासता की कड़केंगी इसके द्वार
स्वतंत्रता का सुख मंदिर है ।
दृढ़ प्रतिज्ञा का मधु वन चिर है ॥
चार दिवारी के भीतर का अद्भुत है संसार
तिलक, लाजपत श्रीयुत गांधी ।

समरांगण में लाख लाड़िले,
　　　　लाखों बलि बलि जायेंगे।
सबसे ऊँची रहे न इसको,
　　　　नीची कभी झुकायेंगे॥
　　गुंजे स्वर संसार सिंधु में,
　　　　स्वतंत्रता का नमो नमो।
राष्ट्र गगन कि दिव्य ज्योति,
　　　　राष्ट्रीय पताका नमो नमो॥

चरखा

सुन्दर सलोना सुप्रभात है स्वतंत्रता का।
चरखा सुरीली तान अब वह गायेगा॥
दूर होगी दीनता अधीनता मलीनता भी।
विद्वेष, सब दुख द्वन्द्व छिन जायेगा॥
गाज सा गिरेगा लंकाशायर की मिलन पै।
गई धन सम्पदा को फिर खींच लायेगा॥

नवयुवकों स्वतंत्रता समर में,
नव जीवन संचार करो ॥

शस्त्र अहिंसा से हलकर,
दासता दुर्ग को क्षार करो।
शांतिक्रांति युग में हे वीरो,
जीवन-सुमन निसार करो ॥

ऊंचे स्वर से एक साथ,
जननी की जय-जयकार करो।
शक्ति देखकर शत्रु शिविर में,
मचे सनाका नमो नमो ॥

राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति,
राष्ट्रीय पताका नमो नमो ॥
उच्च हिमालय की चोटी पर,
जाकर इसे उड़ायेंगे।
विश्व विजयनी राष्ट्र पताका,
का गौरव फहरायेंगे ॥

झंडा वंदन संध्याकाल

राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति,
राष्ट्रीय पताका नमो नमो ।
भारत जननी के गौरव की,
अविचल शाका नमो नमो ॥
कर में लेकर इसे शूरमा,
तीस कोटि भारत संतान ।
हंसते २ मातृ भूमि के,
चरणों पर होंगे बलिदान ॥
हो घोषित निर्भीक विश्व में,
तरल तिरंगा नवल निशान ।
वीर हृदय खिल उठें मारलें,
भारतीय क्षण में मैदान ॥
हो नस नस में व्याप्त चरित,
शूरमा शिवाका नमो नमो ।
राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति,
राष्ट्रीय पताका नमो नमो ॥

बोलो भारत माता की जय,
स्वतंत्रता है ध्येय हमारा ॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा ।
आओ प्यारे वीरो आओ,
देश धर्म पर बलि २ जाओ ।
एक साथ सब मिलकर गाओ,
प्यारा भारत देश हमारा ॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा ।
इसकी शान न जाने पाये,
चाहे जान भले ही जाये ।
विश्व विजय करके दिखलाये,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा ।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ॥

झंडा वन्दन प्रातःकाल

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरषाने वाला,
मातृ-भूमि का तन मन सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमार।

स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
लखकर बढ़े जोश क्षण २ में।
कांपे शत्रु देखकर मन में,
मिट जावे भय संकट सारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

इस झण्डे के नीचे निर्भय,
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO 186
3.12.71
GOVT. OF INDIA

वन्देमातरम्

वन्देमातरम्! सुजलाम सुफलाम
मलयजशीतलाम्।
शस्य श्यामलाम मातरम्।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनिम्॥
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनिम्।
सुहासिनिम्, सुमधुर भाषिणिम्॥
सुखदां, वरदां, मातरम्।
त्रिंश कोटि कंठ कल कल निनाद कराले॥
द्वित्रिंश कोटि भुजैधृर्त खर कर वाले।
के बोले माँ तुमि अबले॥
बहुबल धारिणिम् नमामि तारिणीम्।
रिपुदल वारिणीम् मातरम्॥

चश्मे

चश्मे

चश्मे से आंखों की रोशनी व चेहरे की रवनक बढ़ती है. आंखों की परीक्षा कर चश्मे दिये जाते हैं. धूप में चश्मा लगाने से ठंडक मालूम पड़ती है. चश्मे का फुटकर सामान भी हमारी दुकान पर मिलता है जैसे फ्रेम, लेन्स साइड आदि.

पता:—एन० एम० उपाध्याय
खंडवा सी० पी०

॥ वन्दे मातरम् ॥

आजाद-गीतांजली

होली हम खेलते हैं खून के रंग से यहां,
हमने भारत पर शहीद होनेको मालूम समझा।

प्रकाशक और संग्रहकर्ता:—
म० मो० उपाध्याय.

मुद्रकः—
कर्मवीर प्रेस, खंडवा।

द्वितीय बार १००० किमत -) आना.
तारीख १७ दिसम्बर १९२१ ईस्वी।

891.431
A 211

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1339/10/71

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 186

17/11

186
H 14 P
MICROFILM